

कालिदास की छाँह में संस्कृत काव्य-प्रवाह

विद्याश्री न्यास के साम्बत्सर आयोजनों में से एक 'संस्कृत कवि-गोष्ठी' प्रति वर्ष की ही तरह इस वर्ष भी पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि (14 फरवरी) को आयोजित की गई। उल्लेखनीय है कि पिछले सोलह वर्षों से अभंग चली आ रही यह अपने ढंग की अनूठी कवि-गोष्ठी इस वर्ष कोरोना महामारी को देखते हुए आभासी मंच पर आयोजित की गई, लेकिन इसका एक पहलू यह भी है कि इसके चलते अब तक बनारस और उसके आस-पास से ही जुड़े इस आयोजन ने एक राष्ट्रीय स्वरूप अर्जित कर लिया, इसमें देश के विभिन्न हिस्सों के संस्कृत-साहित्यानुरागी सहृदय सुधीजन की भागीदारी सुनिश्चित हो सकी।

सुखद है कि यह संस्कृत कवि-गोष्ठी अपनी पृष्ठभूमि के रूप में महाकवि कालिदास के संदर्भ में एक गंभीर विमर्श के साथ उपस्थित हुई। इस आयोजन का उद्घाटन सत्र पं. विद्यानिवास मिश्र द्वारा स्थापित 'श्रद्धानिधि न्यास' के संकल्पों में से एक 'पं. मुनिवर मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला' के अंतर्गत प्रो. वसंत कुमार भट्ट के 'अभिज्ञान शाकुंतल में प्रतीकों का विनियोग' विषयक व्याख्यान से संपन्न हुआ। सत्र का शुभारंभ विद्याश्री न्यास के अध्यक्ष डाॅ. यज्ञेश्वर मिश्र द्वारा पंडित जी और पं. मुनिवर मिश्र के चित्रों पर माल्यार्पण, प्रो. पतंजलि मिश्र के विधिपूर्वक वैदिक मंगलाचरण तथा डाॅ. मीनाक्षी पाठक और डाॅ. चेतना पाण्डेय के संगीत-संगत पौराणिक मंगलाचरण तथा विद्याश्री न्यास एवं श्रद्धानिधि न्यास के सचिव डाॅ. दयानिधि मिश्र के भावपूर्ण स्वागत-भाषण से हुआ। अपने शोधपरक सुचिन्तित व्याख्यान में प्रो. वसंत कुमार भट्ट ने शकुंतला नाटक के पाठालोचन की आवश्यकता और उसके वृहत्, वृहत्तर, वृहत्तम और लघुपाठों की विभिन्न पांडुलिपियों की पाठयात्रा के मूल्यवान निष्कर्षों को प्रस्तुत करते हुए बताया कि कालिदास की यह कृति कन्या-विदाई के प्रसंग में पिता के स्नेह तथा मनुष्य और निसर्ग के अद्वैत के चित्रण आदि के साथ एक सर्वथा नवीन भावभूमि पर स्थित है। उन्होंने दुष्यंत और शकुंतला के लिए बहुधा प्रयुक्त भ्रमर और हिरण के प्रतीकार्थ के विभिन्न पक्षों को विश्लेषित करते हुए उनकी अपर्याप्तता की तरफ भी संकेत किए। बताया कि नायक के लिए प्रयुक्त भ्रमरमात्र के प्रतीक को लेकर अगर इस नाटक के निहितार्थ की तलाश की जाएगी तो वह एकदेशीय होगा। वस्तुतः इस नाटक में, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, शकुंतला को केंद्र में स्थापित किया गया है, इसलिए नायक के लिए प्रयुक्त भ्रमर के प्रतीक की तुलना में समग्र नाट्यकृति में शकुंतला के लिए प्रयुक्त चक्रवाक, कोकिला एवं हंस आदि विभिन्न पक्षियों, हिरण तथा शिरीष, आम्रमंजरी, कमल आदि फूलों के प्रतीकों को समझना अधिक महत्वपूर्ण है। शकुंतला का वास्तविक अभिज्ञान प्राप्त करने के लिए इन पशु-पक्षी और पुष्प प्रतीकों की विभिन्न अर्थ-छवियों की तरफ प्रो. वसंत कुमार भट्ट ने ससंदर्भ संकेत किए। मुख्य अतिथि के रूप में

अपने संबोधन में डॉ. वाचस्पति मिश्र ने इस संदर्भ में काव्यपाठपूर्वक पं. विद्यानिवास मिश्र के अवदान का स्मरण किया। संस्कृत विद्या और नाट्यशास्त्र के प्रख्यात पंडित प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्य-सृजन में प्रतीकों के प्रयोग के प्रयोजन और प्रविधि तथा इस संदर्भ में कालिदास और अभिज्ञान शाकुंतल की विशिष्टताओं का विशद व्याख्यान किया। उन्होंने महाभारत के शकुंतलोपाख्यान के उत्तरपक्ष के रूप में 'अभिज्ञान शाकुंतल' को समझने का प्रस्ताव रखते हुए बताया कि शकुंतला को लेकर कालिदास की प्रतीक-योजना भी उसके चरित्र के विकास-क्रम में है। प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि कालिदास के नाटक मूलतः मंचन के लिए हैं, और कई बार उसके प्रतीक-विधान को रंगकर्मियों ने बेहतर समझा है। उद्घाटन एवं व्याख्यान सत्र का संयोजन प्रकाश उदय ने किया।

आयोजन का दूसरा चरण प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, की अध्यक्षता में अखिल भारतीय संस्कृत कवि-गोष्ठी के रूप में संपन्न हुआ। गरिमायय अध्यक्षीय काव्य-पाठ के साथ ही सर्वश्री अमृतलाल भोगयता (गुजरात), ऋषिराज पाठक (दिल्ली), जगदीश प्रसाद सेमवाल (पंजाब), परमानन्द झा (बिहार), पी. वी. मुरलीमाधवन (केरल), पुष्पा दीक्षित (छत्तीसगढ़), बलराम शुक्ल (दिल्ली), रहस बिहारी द्विवेदी (मध्य प्रदेश), राजकुमार मिश्र (हरियाणा), शंकर राजारामन (कर्नाटक), हरेकृष्ण मेहेर (उड़ीसा), संस्कृता मिश्रा (लखनऊ) तथा वाराणसी से उपेन्द्र पाण्डेय, उमाराणी त्रिपाठी, कमला पाण्डेय, कौशलेन्द्र पाण्डेय, गायत्री प्रसाद पाण्डेय, चंद्रकांता राय, धर्मदत्त चतुर्वेदी, मनुलता शर्मा, रेवा प्रसाद द्विवेदी, विवेक पाण्डेय, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, सदाशिव कुमार द्विवेदी और हरिप्रसाद अधिकारी प्रभृति कवियों ने कभी तो संस्कृत के पारंपरिक काव्य-शिल्प में समकालीन वस्तुविधान से और कभी वस्तु और शिल्प दोनों स्तरों पर संस्कृत कविता को सर्वथा नूतन भूमि और भूमिका सौंपते हुए सहृदय श्रोताओं को अपने काव्य-पाठ से घंटों अभिभूत किए रखा। अपनी संचित ज्ञानराशि और साहित्य-संपन्नता के नाते विश्वविख्यात यह संस्कृत भाषा, व्याकरण की तरफ से सर्वथा सिद्धिलब्ध होने के बावजूद अद्यावधि अनंत रचनात्मक संभावनाओं से संपन्न है, इसे यह आयोजन स्थानीय स्तर पर तो पिछले सोलह वर्षों से प्रमाणित करता रहा है, इस वर्ष इसे यह अखिल भारतीय स्तर पर भी प्रमाणित करने का सौभाग्य मिला। इस लब्धि के लिए कवियों, श्रोताओं और आयोजन से जुड़े हर किसी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस कवि-गोष्ठी के संयोजन और संचालन का दायित्व प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने निभाया।